5

भाषा हमारे अस्तित्व का मूल

विश्व विख्यात भाषा वैज्ञानिक, दार्शनिक व वामपन्थी लेखक नोम चॉमस्की ने भाषा विज्ञान सम्बन्धी कई क्रान्तिकारी सिद्धान्तों का सूत्रपात किया। भाषा और भाषा के विकास को लेकर उनका यह साक्षात्कार विज्ञान पत्रिका 'डिस्कवर' में 29 नवम्बर, 2011 को प्रकाशित हुआ था। उनसे यह बातचीत 'डिस्कवर' के सम्वाददाता वेलरी रॉस ने की थी। इसका अनुवाद वरिष्ठ लेखक-पत्रकार आशुतोष उपाध्याय ने किया है।

चॉमस्की अपने इस साक्षात्कार में बताते हैं कि इन्सानों के पास भाषा एक अनूठी क्षमता है। वे इस साक्षात्कार में भाषाओं के अध्ययन के तरीकों व समय के गुज़रने के साथ इनमें आए बदलावों के बारे में बात कर रहें हैं। वे बताते हैं कि इन्सानी भाषा के बारे में अभी किस तरह के सवालों के हल वे खोज रहे हैं और ये सवाल क्यों महत्वपूर्ण हैं। वे बच्चों के भाषा अर्जन के ढंग के बारे में भी बात करते हैं। और बताते हैं कि जहाँ हर भाषा अनूठी है वहीं भाषाओं में समानताएँ भी हैं। इसके साथ-साथ क्या बात थी जिसने उन्हें स्वयं को भाषा के बारे में फर्क ढंग से सोचने के लिए प्रेरित किया और भाषा के बारे में उनके विचारों के विरूद्ध क्या-क्या विचार थे और उनके बारे में उनके क्या तर्क थे, ऐतिहासिक व्याकरण व विवरणात्मक व्याकरण में क्या फर्क है? प्रजनक (Generative) *व्याकरण का विचार क्या है और यह उनके दिमाग में कैसे कौन्धा? सार्वभौमिक व्याकरण का विचार क्या है? कौन-से ऐसे सवाल हैं जो अभी भी अनुत्तरित हैं? इन सब के बारे में वे संक्षिप्त में बात करते हैं ।*

सदियों से विशेषज्ञ यह मानते रहे कि हर भाषा अनूठी होती है। फिर एक दिन 1956 में भाषा विज्ञान के एक युवा प्रोफेसर ने शीर्ष अमेरिकी शिक्षा संस्थान मैसेशुएट्स इन्स्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमआईटी) में सूचना सिद्धान्त पर आयोजित एक गोष्ठी में अपना ऐतिहासिक भाषण दिया। उन्होंने तर्क दिया कि प्रत्येक अर्थपूर्ण वाक्य न सिर्फ अपनी भाषा के नियमों

का, बल्कि सभी भाषाओं पर लागू होने वाले सार्वभौमिक व्याकरण का भी पालन करता है। यही नहीं, बच्चे बड़ों की बातचीत की नकल कर या अपने बाहरी परिवेश से भाषा सीखने की बजाय भाषा में महारत प्राप्त करने की अन्दरूनी क्षमता से परिपूर्ण होते हैं। यह एक ऐसी शक्ति है जो जैविक विकास ने सिर्फ हम मनुष्यों को सौंपी है। युवा प्रोफेसर के इस क्रान्तिकारी विचार ने रातों-रात भाषाविद्ों की सोच को बदलने की शुरुआत कर दी।

एवराम नोम चॉमस्की का जन्म 7 दिसम्बर 1928 को अमेरिकी नगर फिलाडेल्फिया में हुआ था। उनके पिता विलियम चॉमस्की हीब्रू भाषा के विद्वान थे और माँ एल्सी सिमोनोफ्स्की भी विदूषी व बाल पुस्तकों की लेखिका थीं। नोम ने बचपन में ही मध्यकालीन हीब्रू व्याकरण पर अपने पिता द्वारा लिखी पाण्डुलिपि पढ़ डाली, जिसने उनके भविष्य के काम की ज़मीन तैयार की। सन् 1955 तक वे एमआईटी में भाषा विज्ञान पढ़ाने लगे। यहाँ रहकर उन्होंने अपने भाषा विज्ञान सम्बन्धी क्रान्तिकारी सिद्धान्तों का सूत्रपात किया। चॉमस्की उस नज़रिए को चुनौती देते हैं जिससे हम आज भी खुद को देखते हैं। वे कहते हैं, "भाषा हमारे अस्तित्व का मूल है। हम हर वक्त भाषा में लीन रहते हैं। जब हम सड़क पर चल रहे होते हैं तो खुद से अपनी बातचीत को रोकने के लिए ज़बरदस्त इच्छाशक्ति की ज़रूरत पड़ती है। क्योंकि खुद के साथ हमारी बातचीत निरन्तर चलती रहती है।"

चॉमस्की ने राजनीति से दूरी बनाए रखने की वैज्ञानिकों की परम्परा के विपरीत सक्रिय राजनीति में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। वे वियतनाम में अमेरिकी आक्रमण के मुखर विरोधी थे और उन्होंने 1967 के प्रसिद्ध पेंटागन विरोधी मार्च के आयोजन में भी मदद की। जब इस आन्दोलन के नेता गिरफ्तार कर लिए गए तो उन्हें जेल में प्रख्यात उपन्यासकार नॉर्मन मेलर के साथ रखा गया। मेलर ने अपनी पुस्तक *आर्मीज़ ऑफ द नाइट* में चॉमस्की को दुबला-पतला, तीखे नाक-नक्श और खास लहज़े वाला ऐसा शख्स बताया जिसकी सोहबत में भलमनसाहत व दृढ़ नैतिक बल की महक आती है।

चॉमस्की के साथ यहाँ पेश की जा रही बातचीत कनेक्टीकट की पत्रकार मैरिऑन लांग के साथ कई तयशुदा बैठकों के निरस्त होने के बाद की गई। लांग बताती हैं, "वह चॉमस्की के लिए बहुत मुश्किल समय था। पत्नी गम्भीर रूप से बीमार थीं और वे उनकी सेवा में जुटे थे। इस बातचीत के महज़ 10 दिन पहले वे गुज़र गईं। इस हादसे के बाद चॉमस्की का यह पहला साक्षात्कार होना था लेकिन वे इसके लिए राज़ी हो गए।" बाद में उन्होंने *डिस्कवर* के संवाददाता वेलरी रॉस के कई सवालों के जवाब दिए जिसके कुछ अंश यहाँ दिये जा रहे हैं।

प्रश्न: आप इन्सानी भाषा को अनोखा गुण बताते हैं। कौन-सी बात इसे खास बनाती है?

चॉमस्की: मनुष्य दूसरे प्राणियों से फर्क हैं और इस लिहाज़ से सब मनुष्य मूलत: एक जैसे होते हैं। अगर अमेज़न के शिकारी-संग्राहक आदिवासी समुदाय के किसी बच्चे को बॉस्टन में पाला-पोसा जाए तो वह भाषाई क्षमता के मामले में यहाँ पल-बढ़ रहे मेरे बच्चों से ज़रा भी फर्क नहीं होगा। इससे उलटी परिस्थिति में भी यही होगा। यानी बॉस्टन का कोई बच्चा अमेज़न

आदिवासियों के बीच पले-बढ़े तो उनकी भाषा-बोली सहज ढंग से बोलने लगेगा। यह अनोखा इन्सानी खज़ाना, जो हम सबके पास है, हमारी संस्कृति व हमारे कल्पनाशील बौद्धिक जीवन के बड़े हिस्से का बुनियादी तत्व है। इसी वजह से हम योजनाएँ बना पाते हैं, सृजनात्मक कला कर्म करते हैं और जटिल समाजों का निर्माण कर लेते हैं।

प्रश्न: भाषा की इस ताकत का जन्म कब और कैसे हुआ?

चॉमस्की: अगर आप पुरातात्विक अभिलेखों को देखें तो करीब डेढ़ लाख से 75 हज़ार वर्ष पूर्व समय की एक छोटी-सी खिड़की में रचनात्मक विस्फोट होता दिखाई पड़ता है। इस काल में अचानक जटिल हस्तशिल्प, प्रतीकात्मक निरूपण, आकाशीय घटनाओं का मापन तथा जटिल सामाजिक संरचनाओं जैसी सृजनात्मक गतिविधियों का विस्फोट देखने को मिलता है। प्रागैतिहासिक काल का लगभग हर विशेषज्ञ इस घटना को भाषा के अचानक उद्‌भव के साथ जोड़ता है। ऐसा नहीं लगता कि इस घटना का मानव के शारीरिक बदलावों से कोई सम्बन्ध है, आज के इन्सान के बोलने व सुनने के तंत्र बिलकुल वैसे ही हैं जैसे छह लाख साल पहले के मनुष्य के थे। मगर मनुष्य में अभूतपूर्व संज्ञानात्मक बदलाव आया है। कोई नहीं जानता क्यों।

प्रश्न: इन्सानी भाषा में आपकी दिलचस्पी कब शुरू हुई?

चॉमस्की: बहुत छोटी उम्र में मुझे अपने पिता से आधुनिक हीब्रू साहित्य एवं अन्य पाठ्य सामग्री पढ़ने को मिली। 1940 के आसपास उन्हें फिलाडेल्फिया की एक हीब्रू संस्था ड्रॉप्सी कॉलेज से पीएचडी की डिग्री मिली। वे यहूदीवादी थे और मध्यकालीन हीब्रू व्याकरण पर काम करते थे। मुझे याद नहीं कि मैंने अपने पिता की किताब के प्रूफ आधिकारिक तौर पर पढ़े थे या नहीं, लेकिन मैंने उसे पढ़ा ज़रूर था। व्याकरण सम्बन्धी आम समझ कुछ हद तक मुझे इसी किताब से मिली। लेकिन इससे पीछे जाएँ तो व्याकरण के अध्ययन का मतलब था, ध्वनियों को व्यवस्थित करना, काल देखना, इन चीज़ों को सूचीबद्ध करना और यह देखना कि ये एक-दूसरे के साथ कैसे जुड़ती हैं।

प्रश्न: भाषाविद् ऐतिहासिक व्याकरण और विवरणात्मक व्याकरण में फर्क करते हैं। इन दोनों में क्या अन्तर है?

चॉमस्की: ऐतिहासिक व्याकरण कुछ इस तरह का अध्ययन है जैसे, आधुनिक अँग्रेज़ी का विकास मध्यकालीन अँग्रेज़ी से किस तरह हुआ। किस तरह वह मध्यकालीन, प्रारम्भिक व पुरानी अँग्रेज़ी से निकली और किस तरह वह जर्मेनिक से और जर्मेनिक उस भाषा स्रोत से विकसित हुई जिसे हम प्रोटो-इंडो-यूरोपियन कहते हैं और जिसे कोई नहीं बोलता। इसलिए इसे फिर से गढ़ना पड़ता है। भाषाएँ समय के साथ कैसे विकसित होती हैं, यह इस बात को पुनर्निर्मित करने का एक प्रयास है। आप इसे जैविक विकास (Biological Evolution) के अध्ययन के समकक्ष मान सकते हैं। विवरणात्मक व्याकरण किसी समाज या व्यक्ति-विशेष के लिए मौजूदा भाषाई व्यवस्था को जानने का प्रयास है। आप इस अन्तर को जैविक विकास और मनोविज्ञान के बीच फर्क की तरह देख सकते हैं।

प्रश्न: और आपके पिता के ज़माने के भाषाविद्, वे क्या करते थे?

चॉमस्की: वे वास्तविक धरातल पर इस्तेमाल की जा रही भाषाई विधियों पर काम करते थे। उदाहरण के लिए, अगर आप चेरोकी समुदाय के व्याकरण पर काम करना चाहते हैं तो आप उस समुदाय के बीच जाएँगे। और स्थानीय भाषा बोलने वालों से सूचनाएँ इकट्ठी करेंगे।

प्रश्न: ये भाषाविद् किस तरह के सवाल पूछते थे?

चॉमस्की: मान लीजिए आप चीन से आए मानवशास्त्री भाषाविद् हैं और मेरी भाषा का अध्ययन करना चाहते हैं। पहली बात आप यह जानना चाहेंगे कि मैं किस तरह की ध्वनियों का इस्तेमाल करता हूँ। और फिर आप पूछेंगे कि ये ध्वनियाँ एक साथ कैसे जुड़ती हैं। उदाहरण के लिए मैं 'ब्निक' न बोलकर 'ब्लिक' क्यों बोलता हूँ और इन ध्वनियों को कैसे व्यवस्थित किया जाता है? उन्हें किस तरह जोड़ा जाता है? अगर आप उस ढंग को देखें, जिसके मुताबिक शब्द के ढाँचे को व्यवस्थित किया जाता है, तो क्या किसी क्रिया में भूतकाल भी होता है? अगर होता है तो क्या यह क्रिया के बाद होता है या इसके पहले? या यह किसी और तरह की चीज़ है? और आप इसी तरह के कई और सवाल पूछते चले जाते हैं।

प्रश्न: लेकिन आप तो इस नज़रिए से सहमत नहीं थे। क्यों?

चॉमस्की: मैं उस वक्त पेन यूनिवर्सिटी में था और मेरी ग्रेजुएट थीसिस का शीर्षक था बोलचाल की हीब्रू का आधुनिक व्याकरण। इस भाषा की मेरी समझ खासी अच्छी थी। मैंने भी इस पर ठीक उसी तरह काम करना शुरू किया, जैसा हमें उस वक्त पढ़ाया जाता था। मुझे एक हीब्रू भाषी खबरी मिला जिससे मैंने सवाल पूछने शुरू किए और मुझे आँकड़े मिलने लगे। एक मौका ऐसा आया कि अचानक मुझे लगा: क्या बेहूदगी है! मैं ऐसे सवाल पूछ रहा हूँ जिनके जवाब मैं पहले से ही जानता हूँ।

प्रश्न: जल्द ही आपने भाषा विज्ञान में अपने शोध की निहायत नई विधि विकसित कर ली। ये विचार कैसे जन्मे?

चॉमस्की: इससे पहले 1950 में, जब मैं हार्वर्ड में स्नातक छात्र था, यह आम धारणा थी कि अन्य मानवीय गतिविधियों की तरह भाषा भी सीखी जाने वाली आदतों का एक संग्रह है। यह उसी तरह सीखी जाती है जैसे पालतू जानवर प्रशिक्षित किए जाते हैं। यानी प्रबलीकरण (Reinforcement) के ज़रिए। उन दिनों यह धारणा एक तरह से अन्धविश्वास की तरह व्याप्त थी। लेकिन हम दो या तीन लोग ऐसे थे, जो इस बात से सहमत नहीं थे और हमने चीज़ों को बिलकुल अलग तरह से देखना शुरू किया।

खास तौर पर, हमने कुछ बुनियादी तथ्यों पर गौर किया: प्रत्येक भाषा अनगिनत सुव्यवस्थित अभिव्यक्तियों को गढ़ने और प्रकट करने का एक माध्यम है, जिसमें हर अभिव्यक्ति की एक अर्थगत व्याख्या और ध्वन्यात्मक रूप है। इसलिए यहाँ ऐसी चीज़ है जिसे हम प्रजनक प्रक्रिया (Generative Procedure) कहते हैं, अनगिनत वाक्यों या अभिव्यक्तियों को

पैदा करने और उन्हें अपनी विचार प्रणालियों व स्नायुतंत्र से जोड़ने की क्षमता। हमें हर बार इस केन्द्रीय गुण को ध्यान में रखकर शुरुआत करनी होती है। व्यवस्थित अभिव्यक्तियों और उनके अर्थ के बेरोक-टोक उत्पादन का गुण। हमारे ये विचार बाद में उस सिद्धान्त के रूप में घनीभूत हुए जिसे आज हम जैव-भाषाई रूपरेखा (Biolinguistic Framework) कहते हैं। यह सिद्धान्त भाषा को मानव जीव विज्ञान के एक तत्व के रूप में देखता है, ठीक वैसे ही जैसे हमारा दृष्टि-तंत्र है।

प्रश्न: आपका सिद्धान्त है कि सभी मनुष्यों का एक 'सार्वभौमिक व्याकरण' होता है। इस बात का क्या अर्थ है?

चॉमस्की: इसका आशय इन्सान की भाषा क्षमता की आनुवंशिक जड़ों से है। उदाहरण के लिए, आप अपने अन्तिम वाक्य पर गौर करें। यह ध्वनियों का बेतरतीब क्रम नहीं है। आपने शब्दों का अत्यन्त निश्चित ढाँचा खड़ा किया है और इसका अत्यन्त विशिष्ट भाषाई अर्थ है। इसका एक खास मतलब है, कोई दूसरा मतलब नहीं और इसकी एक खास ध्वनि है, दूसरी नहीं। बताइए, आपने यह किया कैसे? यहाँ दो सम्भावनाएँ हो सकती हैं। पहली, इसे एक चमत्कार मान लिया जाए। या दूसरी, आपके पास नियमों की एक आन्तरिक व्यवस्था है जो शब्दों के ढाँचे और उसके अर्थ को निर्धारित करती है। मैं नहीं समझता यह एक चमत्कार की देन है।

प्रश्न: आपके भाषा-वैज्ञानिक विचारों पर शुरुआत में कैसी प्रतिक्रियाएँ हुईं?

चॉमस्की: शुरू-शुरू में ज़्यादातर लोगों ने हमारे विचारों को खारिज किया या इनकी उपेक्षा की। यह व्यवहारवादी विज्ञान (Behavioral Science) का दौर था, मानव क्रियाओं और व्यवहार का अध्ययन, जिसमें व्यवहार का नियंत्रण तथा रूपान्तरण भी शामिल किया जाता है। व्यवहारवाद (Behaviorism) कहता है कि आप किसी व्यक्ति को मनचाहे रूप में बदल सकते हैं, बशर्ते आप उसके परिवेश व प्रशिक्षण पद्धति को ठीक से व्यवस्थित कर सकें। मनुष्य के रूपान्तरण में आनुवंशिक घटक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, इस विचार को अजनबी बताकर हल्के में लिया गया। बाद में मेरे इस विधर्मी विचार को 'अन्तर्जात प्रकल्पना' (Innateness Hypothesis) का नाम दे दिया गया और इसकी भर्त्सना में रचे गए साहित्य का ढेर लग गया। आज भी आप प्रमुख शोध पत्रिकाओं में ऐसे सूत्रवाक्य पढ़ सकते हैं कि भाषा सिर्फ संस्कृति, परिवेश तथा प्रशिक्षण का परिणाम है। एक तरह से यह धारणा हमारे सहजबोध का हिस्सा बना दी गई है। हम सब भाषा सीखते हैं, चाहे वह कितनी भी मुश्किल क्यों न हो। हम पाते हैं कि परिवेश भी अपना असर छोड़ता है।

इंग्लैंड में पलने-बढ़ने वाले लोग अँग्रेज़ी बोलते हैं, स्वाहिली नहीं। और वास्तविक सिद्धान्त हमारी चेतना तक नहीं पहुँच पाते। हम अपने भीतर झाँककर उन छुपे हुए सिद्धान्तों को नहीं देख सकते जो हमारे भाषाई व्यवहार को निर्धारित करते हैं। और हम उन सिद्धान्तों को भी नहीं देख सकते जो हमें अपने शरीर को हिलाने की इजाज़त देते हैं। यह भीतर ही भीतर होता रहता है।

प्रश्न: भाषा वैज्ञानिक इन छुपे हुए सिद्धान्तों की खोज कैसे कर लेते हैं?

चॉमस्की: आप आँकड़ों का संग्रह कर किसी भाषा के बारे में जानकारी हासिल कर सकते हैं। मसलन, मेरी भाषा का अध्ययन कर रहा चीनी भाषाविद् इस बारे में मुझ से सवाल पूछकर जवाब इकट्ठा कर सकता है। यह एक तरह का संग्रह होगा। दूसरे तरह का संग्रह यह हो सकता है कि लगातार तीन दिन तक जो कुछ मैं बोलूँ उसे वह टेप करता रहे। और किसी भाषा को सीखते और इस्तेमाल करते वक्त लोगों के दिमाग में जो कुछ चल रहा है, उसका अध्ययन कर आप भाषा के बारे में जाँच-पड़ताल कर सकते हैं। आज के भाषाविद्ों को चाहिए कि वे उन नियमों व सिद्धान्तों पर ध्यान देने का प्रयास करें जिन्हें, उदाहरण के लिए, आप ठीक इस वक्त मेरे द्वारा गढ़े जा रहे वाक्यों का अर्थ निकालने और उन्हें समझने या फिर अपने वाक्यों को बनाने के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं।

प्रश्न: क्या यह व्याकरण की उस पुरानी व्यवस्था जैसा नहीं, जिसे आप पहले ही खारिज कर चुके हैं?

चॉमस्की: नहीं। व्याकरण के परम्परागत अध्ययन में आप ध्वनियों व शब्द रचना पर ध्यान देते हैं और शायद थोड़ा बहुत वाक्य विन्यास पर। पिछले 50 वर्षों के प्रजनक भाषा विज्ञान (Generative Linguistics) में आप, मसलन, यह पूछ रहे हैं कि प्रत्येक भाषा के लिए नियमों व सिद्धान्तों का वह कौन-सा तंत्र है जो व्यवस्थित अभिव्यक्तियों की अनगिनत शृंखलाओं को तय करता है। इसके बाद आप उन्हें एक निश्चित व्याख्या से जोड़ते हैं।

प्रश्न: हमारी भाषाई समझ के साथ क्या मस्तिष्क छवियाँ जुड़ी हुई हैं?

चॉमस्की: मिलान (इटली का एक शहर) के एक ग्रुप ने हाल ही में भाषा के साथ होने वाली मस्तिष्क की क्रियाशीलता से सम्बन्धित एक दिलचस्प अध्ययन किया है। उन्होंने अपने शोध छात्रों को निरर्थक भाषाओं वाली दो तरह की लिखित सामग्री दी। इनमें एक प्रतीकात्मक भाषा थी, जिसे इतालवी भाषा के नियमों के आधार पर गढ़ा गया था, हालाँकि शोध छात्र इसे नहीं जानते थे। दूसरी को सार्वभौमिक व्याकरण के नियमों का उल्लंघन कर तैयार किया गया था। एक खास मामले में, माना आप किसी वाक्य का निषेध करना चाहते हैं, 'जॉन यहाँ था, जॉन वहाँ नहीं था।' कुछ निश्चित चीज़ें हैं जिन्हें करने की इजाज़त भाषाओं में आपको दी जाती है। आप 'नहीं' शब्द को कुछ स्थानों में रख सकते हैं लेकिन कुछ अन्य स्थानों में नहीं रख सकते। इसलिए पहली मनगढ़न्त भाषा में आप निषेधकारी तत्व को किसी स्वीकार्य जगह पर रखते हैं, जबकि दूसरे में आप इसे अस्वीकार्य जगह पर रख देते हैं। मिलान ग्रुप ने पाया कि स्वीकार्य निरर्थक वाक्य के साथ मस्तिष्क के भाषाई क्षेत्र में सक्रियता दिखाई देती है लेकिन अस्वीकार्य वाक्य: वे जो सार्वभौमिक व्याकरण के नियमों का उल्लंघन करते हैं - मस्तिष्क में कोई सक्रियता पैदा नहीं करते। इसका मतलब यह हुआ कि लोग अस्वीकार्य वाक्यों के साथ भाषा की तरह नहीं बल्कि पहेली की तरह खेल रहे थे। यह एक शुरुआती परिणाम है, लेकिन यह स्पष्ट रूप से संकेत देता है कि भाषाओं की पड़ताल से निकलने

वाले भाषाई सिद्धान्तों का दिमागी क्रियाशीलता के साथ गहरा रिश्ता है, जैसे कि किसी को उम्मीद और अपेक्षा हो सकती है।

प्रश्न: हाल के आनुवंशिक अध्ययन भी भाषा के बारे में कुछ इसी तरह के संकेत देते हैं। क्या यह सही है?

चॉमस्की: हाल के वर्षों में एक जीन की खोज हुई है, जिसका नाम है - फॉक्सपी2। यह जीन खास तौर पर दिलचस्प है, क्योंकि इसमें किसी किस्म का उत्परिवर्तन (Mutation) होने पर भाषाई इस्तेमाल सम्बन्धी कमज़ोरियाँ सामने आने लगती हैं। इस जीन को उस क्रिया से जोड़ा जाता है जिसे हम ऑरोफेशियल एक्टीवेशन (Aurofacial Activation) कहते हैं, यानी बोलते वक्त हम अपने मुँह, अपने चेहरे और जीभ को किस प्रकार नियंत्रित करते हैं। इसलिए फॉक्सपी2 का सम्भवत: भाषा के इस्तेमाल के साथ कोई रिश्ता है। यह जीन सिर्फ मनुष्यों में ही नहीं, बल्कि कई अन्य प्राणियों में भी पाया जाता है और अलग-अलग प्रजातियों में अलग-अलग ढंग से काम करता है। यह जीन कोई एक काम नहीं करता। लेकिन इस खोज को भाषा के कुछ पहलुओं के आनुवंशिक आधार की मौजूदगी की पुष्टि की दिशा में एक दिलचस्प शुरुआती कदम माना जा सकता है।

प्रश्न: आप कहते हैं कि जन्मजात भाषाई क्षमता मनुष्यों की विशिष्टता है, मगर फॉक्सपी2 की सततता कई प्रजातियों में देखी गई है। क्या ये दोनों बातें परस्पर विरोधाभासी नहीं हैं?

चॉमस्की: यह बात लगभग अर्थहीन है कि इसमें प्रजातिगत सातत्यता है। इसमें किसी को सन्देह नहीं कि मनुष्य का भाषाई तंत्र जीन, स्नायु आदि पर आधारित है। भाषा के प्रयोग, समझ, अधिग्रहण और निर्माण में शामिल पद्धतियाँ एक स्तर तक सम्पूर्ण जन्तु जगत में दिखाई देती हैं। और सच कहें तो सम्पूर्ण जीव जगत में दिखाई देती हैं। कुछेक को तो आप जीवाणुओं में भी देख सकते हैं। लेकिन यह बात इसके विकास या समान मूल से पैदा होने का शायद ही कोई संकेत देती हैं। भाषा उत्पन्न करने जैसे विशिष्ट मामले में कोई प्रजाति अगर मनुष्य के सबसे ज़्यादा नज़दीक कही जा सकती है, तो वह हैं पक्षी। लेकिन इसकी वजह समान उद्‌गम नहीं है। यह एक अलग परिघटना है, जिसे हम अभिसरण (Convergence) कहते हैं - लगभग एक जैसी व्यवस्थाओं का अलग-अलग स्वतंत्र रूप से विकास। फॉक्सपी2 खासा दिलचस्प है मगर यह ज़्यादातर भाषा के हाशिए पर रहने वाले हिस्सों का निर्धारण करता है, जैसे भाषा का (भौतिक) उत्पादन। इसके बारे में जो कुछ भी खोजा जा रहा है, उसका भाषा-वैज्ञानिक सिद्धान्तों पर प्रभाव पड़ने की सम्भावना बहुत कम है।

प्रश्न: पिछले 20 वर्षों से आप भाषा की न्यूनतमवादी (Minimalist) समझ पर काम कर रहे हैं। इसकी क्या ज़रूरतें हैं?

चॉमस्की: मान लीजिए भाषा बर्फ के एक फाहे की तरह है। यह प्रकृति के नियम के मुताबिक आकार ग्रहण करती है, ऐसा आकार जो बाहरी निर्धारकों को सन्तुष्ट करे। भाषा

की खोज के बारे में इस नज़रिए को न्यूनतमवादी कार्यक्रम (Minimalist Program)[1] कहा जाता है। मैं समझता हूँ, इस कार्यक्रम ने कुछ महत्वपूर्ण परिणाम दिए हैं। इसने दिखाया है कि भाषा यकीनन कुछ शब्दार्थ सम्बन्धी अभिव्यक्तियों यानी अर्थ बताने का आदर्श हल है लेकिन स्पष्ट अभिव्यक्ति के लिहाज़ से उसका डिज़ाइन बहुत खराब है। यानी एक विशिष्ट आवाज़ निकालकर आप 'बेसबॉल' कह पाते हैं, इसके लिए 'पेड़' नहीं कहते।

प्रश्न: भाषा विज्ञान के सामने बड़े सवाल कौन-से हैं?

चॉमस्की: कई सवालों के जवाब ढूँढना अब भी बाकी है । कुछ सवाल 'क्या' से शुरू होने वाले हैं। जैसे - भाषा क्या है? इस वक्त आप और मैं जो कुछ कर रहे हैं, उसके नियम और सिद्धान्त क्या हैं? कुछ और सवाल 'कैसे' से शुरू होते हैं: आपने और मैंने इस क्षमता को कैसे हासिल किया। हमारे आनुवंशिक भण्डार व अनुभवों में और प्रकृति के नियमों में आखिर क्या छुपा हुआ है? और इसके बाद 'क्यों' से शुरू होने वाले सवाल हैं, जो सबसे कठिन हैं: भाषा के नियम ऐसे ही क्यों हैं, कुछ और तरह के क्यों नहीं? किस हद तक यह सही है कि भाषा की बुनियादी डिज़ाइन उन बाहरी शर्तों के अनुकूल हल पेश करती है, जिन्हें भाषा अपरिहार्य रूप से पूरा करती है? यह एक बड़ी समस्या है। भाषा की प्रकृति के बारे में जो कुछ हम जानते हैं उसे हम किस हद तक मस्तिष्क में होने वाली क्रियाओं से जोड़कर देख सकते हैं? और अन्ततः क्या भाषा के आनुवंशिक आधार के बारे में कोई गम्भीर पड़ताल हुई है? इन सभी बिन्दुओं पर बेशक प्रगति दिखाई देती है लेकिन बड़े रिक्त स्थान अब भी बने हुए हैं।

प्रश्न: हर माता-पिता इस बात पर हैरान होते हैं कि किस तरह बच्चे भाषा सीखते हैं। यह बात सहसा अविश्वसनीय लगती है कि इस प्रक्रिया के बारे में हम अब भी बहुत कम जानते हैं।

चॉमस्की: आज हम जानते हैं कि जन्म के समय एक शिशु को अपनी माँ की भाषा के बारे में बहुत थोड़ी जानकारी होती है। अगर दो भाषाएँ जानने वाली कोई महिला उसके सामने बोले तो वह अपनी मातृभाषा और दूसरी भाषा के बीच फर्क समझ सकता है। उसके परिवेश में तमाम तरह की चीज़ें घट रही होती हैं, जिसे विलियम जेम्स 'बढ़ता, उभरता विभ्रम' कहते हैं। मगर शिशु किसी तरह इस जटिल परिवेश से खुद ब खुद उन आँकड़ों को छाँट लेता है, जो भाषा से सम्बन्ध रखते हैं। कोई भी दूसरा प्राणी ऐसा नहीं कर पाता। एक चिम्पांज़ी ऐसा नहीं कर पाता। और बहुत जल्दी व स्वतः ढंग से शिशु एक आन्तरिक तंत्र हासिल करने की दिशा में बढ़ जाता है। यह तंत्र अन्ततः उस क्षमता के रूप में प्रकट होता है, जिसका इस्तेमाल हम इस वक्त कर रहे हैं। शिशु के दिमाग में क्या चल रहा है? मानव जीनोम के

1 भाषा विज्ञान का किसी भी भाषा के लिए मिनिमलिस्ट प्रोग्राम उन कम से कम (न्यूनतम) नियमों के समूह तक पहुँचने का प्रयास है जिनसे उस भाषा के सभी तरह के वक्तव्य उत्पादित हो सकें। इसके अनुसार इन्सानी भाषाई क्षमता की कार्य पद्धति इस बात के सबसे अनुकूल है कि मानो वह किसी सरल गणना व भाषाई रचनात्मक नियमों अथवा मस्तिष्क में उपस्थित किसी एक सरल छोटी रचना द्वारा संचालित है। यानी मिनिमलिस्ट प्रोग्राम इस मान्यता पर कार्य करता है कि व्याकरण एक आदर्श रचना है और उसमें सिर्फ उतना ही है जो हमारी अवधारणात्मक व शारीरिक (ध्वनि उत्पादन-ग्रहण सन्दर्भित) आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त है।

कौन-से तत्व इस प्रक्रिया में योगदान कर रहे हैं? ये चीज़ें कैसे विकसित होती हैं? इन सब बातों को ठीक से समझना अभी बाकी है।

प्रश्न: उच्चतर स्तर पर अर्थ के बारे में क्या कहेंगे? जो महान गाथाएँ लोग पीढ़ी दर पीढ़ी सुनाते आए हैं, उनके विषय बार-बार दोहराए जाते हैं। क्या यह दोहराव मनुष्य की जन्मजात भाषा के बारे में कुछ संकेत देता है?

चॉमस्की: जानी-पहचानी परी कथाओं में से एक कहानी एक खूबसूरत राजकुमार की है जिसे कोई दुष्ट जादूगरनी मेंढक में बदल देती है। कहानी के अन्त में एक सुन्दर राजकुमारी आकर मेंढक को चूमती है और वह फिर से राजकुमार में बदल जाता है। हर बच्चा इस बात को जानता है कि वह मेंढक दरअसल राजकुमार है, लेकिन उन्हें यह कैसे पता चलता है? वह अपने प्रत्येक शारीरिक गुण के हिसाब से मेंढक है। कौन-सी बात उसे राजकुमार बनाती है? यह पता चलता है कि यहाँ एक नियम काम करता है: लोगों व जन्तुओं तथा अन्य जीवित प्राणियों को हम उनके एक गुण से पहचानते हैं, जिसे *मनोवैज्ञानिक सातत्य* (Psychic Continuity) कहा जाता है। बच्चे उसकी पहचान एक तरह के दिमाग या आत्मा या एक ऐसे अन्दरूनी तत्व के रूप में करते हैं जो उनके भौतिक गुणों से स्वतंत्र है। वैज्ञानिक इस बात पर विश्वास नहीं करते लेकिन हर बच्चा करता है और हर मनुष्य जानता है कि इस तरह दुनिया की व्याख्या कैसे की जाती है।

प्रश्न: आपकी बातों से ऐसा लगता है जैसे भाषा विज्ञान का विज्ञान बस शुरू ही हुआ है।

चॉमस्की: भाषा के बारे में कई ऐसे सरल विवरणात्मक तथ्य हैं, जिन्हें समझा नहीं गया है। जैसे, वाक्य किस तरह अपना अर्थ हासिल करते हैं? उनकी आवाज़ कैसे बनती है? किस प्रकार दूसरे लोग उन्हें समझ लेते हैं? भाषा संगणना (Computation) में एक-रेखीयता (Linear Order) का पालन क्यों नहीं करती? उदाहरण के लिए, एक सरल वाक्य लीजिए, जैसे 'क्या उड़ रहे गिद्ध तैरते हैं?' आप इसे समझते हैं, हर कोई इसे समझता है। एक बच्चा इसे इस प्रश्न के रूप में लेता है कि क्या गिद्ध तैर सकते हैं। सवाल में यह नहीं पूछा जा रहा है कि क्या वे उड़ सकते हैं। आप कह सकते हैं, 'क्या जो गिद्ध उड़ रहे हैं तैरते हैं?' मतलब क्या इसे यह माना जाए कि गिद्ध जो उड़ रहे हैं तैरते हैं? ये वे नियम हैं, जिन्हें हर कोई जानता है, बिना सोचे-समझे जान लेता है। लेकिन क्यों? यह अब भी एक रहस्य है। और इन नियमों के स्रोत मूलत: अनजान हैं।

स्रोत

- "भाषा हमारे अस्तित्व का मूल", *शैक्षणिक संदर्भ,* अंक 44 (मूल अंक 101), पृ 23-32।